डॉल्फिन के पास भी शब्द हैं

लगता है कि डॉल्फिन भाषा के रूप में सीटियों का इस्तेमाल करती हैं। इन सीटियों की प्रारंभिक आवृत्ति, कुल अवधि और अंतिम आवृत्ति के आधार पर शोधकर्ताओं ने 186 विभिन्न प्रकार की सीटियां पहचानी हैं।

जब आप डॉल्फिनों की सीटियों को ध्यान से सुनेंगे तो आपको लगेगा कि वे आपस में बातें कर रही हैं। हाल ही में एक प्रोजेक्ट में डॉल्फिनों की सीटियों का बारीकी से अध्ययन किया गया है। इस अध्ययन के दौरान उनकी सीटियों के प्रकार और व्यवहार में सम्बंध भी देखा गया है।

ऑस्ट्रेलिया के न्यू साउथ वेल्स में स्थित साउथ क्रॉस विश्वविद्यालय के व्हेल रिसर्च सेंटर की लिज हॉकिन्स ने यह अध्ययन बॉटलनोज़ डॉल्फिनों पर किया। इसके लिए उन्होंने ऑस्ट्रेलिया के पश्चिमी तट की डॉल्फिनों के जीवन में तांक- झांक की। तीन साल की खोज के बाद उन्होंने पाया कि डॉल्फिनों का संवाद बहुत ही पेचीदा होता है, जिसकी वजह से इसे एक मायने में भाषा की संज्ञा दी जा सकती है। हॉकिन्स ने अपने निष्कर्ष साउथ अफ्रीका में केपटाउन स्थित *मेरीन मेमोलॉजी सोसायटी* में प्रस्तुत किए।

डॉल्फिन अपनी भाषा के रूप में सीटियों का इस्तेमाल करती हैं। सभी डॉल्फिनों की अपनी एक विशेष सीटी होती है, जिनके द्वारा उनकी पहचान होती है। इन्हें हम उनके हस्ताक्षर कह सकते हैं। लेकिन जो दूसरे प्रकार की सीटियां हैं वे अभी तक हमारे लिए राज़ बनी हुई हैं।

हॉकिन्स ने बैरन बे में 51 समूहों में रहने वाली डॉल्फिनों की 1647 सीटियों को रिकॉर्ड किया। उन्होंने इन सीटियों की प्रारंभिक आवृत्ति, कुल अवधि और अंतिम आवृत्ति पर ध्यान दिया। 186 विभिन्न प्रकार की सीटियां पहचानी, जिनमें कम से कम 20 किस्में ज़्यादा आम थीं। इसके बाद उन्होंने सारी सीटियों को 5 टोनल वर्गों (स्वर समूहों) में बांट दिया। अब उन्होंने यह देखना शुरू किया कि किस व्यवहार के साथ डॉल्फिन किस स्वर समूह की सीटी बजाती है।

उदाहरण के लिए जब डॉल्फिनों का समूह यात्रा कर रहा हो, तो 57 प्रतिशत डॉल्फिनों की सीटियां 'साइन' किस्म की होती हैं अर्थात उनमें एक निश्चित अंतराल के बाद सुरों में उतार-चढ़ाव होते हैं। लेकिन जब डॉल्फिनें भोजन करती हैं या आराम करती हैं तब इस प्रकार की सीटियां बहुत कम बजाती हैं। जब डॉल्फिनें सामूहिक रूप से मिलती हैं तो वे बातें करने के लिए अधिकतर विशेष 'सपाट सुर' वाली या 'बढ़ते सुर' वाली सीटियों का इस्तेमाल करती हैं। इसको और अधिक गहराई से जानने के लिए हॉकिन्स ने नाव द्वारा लहरों को ऊपर-नीचे किया। ऐसा करने पर उन्होंने पाया कि सभी डॉल्फिनों की सीटियां 'सपाट सुर' वाली थीं। इन सीटियों को ध्यान से सुनने पर उन्होंने पाया कि ये सीटियां बच्चों की आवाज़ पुकार से काफी मिलती हैं।

हॉकिन्स ने क्वीन्सलैंड के मोरीटोन द्वीप में रहने वाली डॉल्फिनों के झुंड का भी अध्ययन किया। उन्होंने पाया कि अकेले पड़ जाने पर डॉल्फिन जो सीटियां निकालती हैं, वे एक अलग ही प्रकार की होती हैं। हॉकिन्स को लगता है कि शायद डॉल्फिन अपनी भाषा में कहती हैं: मैं यहां हूं, बाकी सब कहां हैं?

डॉल्फिनों पर हॉकिन्स के अलावा ब्रिसबैन स्थित क्वीन्सलैंड विश्वविद्यालय की मेलिन्डा रेकडॉहल भी अध्ययन कर रही हैं। रैकडॉहल कहती हैं कि उन्होंने काफी खोज की है और देखा है कि जब डॉल्फिनों को हम अपने हाथ से भोजन कराएं ,तो वे बहुत ज़्यादा सीटियां बजाती हैं, मानो कह रही हों कि जल्दी करो या भोजन यहां हैं। पक्का निष्कर्ष निकालना अभी ज़ल्दबाजी होगी, लेकिन यह संभव हो सकता है। ***(स्रोत फीचर्स)***